कथा सरिता

ईर्ष्या पर पाई विजय

रमेश और विजय मित्र थे। आर्थिक स्थिति भी दोनों की समान थी। रमेश मन ही मन विजय से ईर्ष्या करता था कि वह हमेशा संतुष्ट कैसे रहता है। वह उसके संतोष को दूर करने के उपाय सोचा करता था। एक बार गांव में एक योगी आए। वे जिसे पसंद करते उसे मनचाहा वरदान भी देते थे। रमेश ने उन्हें घर बुलाया और उनका खूब सत्कार किया। योगी ने प्रसन्न होकर रमेश से वरदान मांगने को कहा। रमेश बोला, महाराज मैं चाहता हूँ कि हर बात में विजय से बड़ा कहलाऊं। योगी बोले, तुम फिर हानि में भी उससे बड़े ही रहोगे। जैसे उसकी एक हजार अशर्फियों की हानि तो तुम्हारी दो हजार की। उसकी एक आंख चली जाए तो तुम्हारी दोनों। ऐसा वरदान मैं नहीं दे सकता। रमेश बोला, आप मेरी बात नहीं समझे। मैं धन-प्रसिद्धि में विजय से बड़ा बनना चाहता हूँ। योगी बोले, अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें उससे ज्यादा अच्छा मिले तो विजय को भी सदा सुखी रखना होगा। क्या तुम्हें स्वीकार है, रमेश ने यह सोचकर कि उसे तो विजय से ज्यादा ही मिलेगा, उसने हां कर दी। योगी बोले, तुम धन-प्रसिद्धि में विजय से बड़े बने रहो यह वरदान तुम्हें देता हूँ परंतु याद रखना, एक बार ही सही इसे नहीं चाहोगे तो मेरा वरदान निष्फल हो जायेगा। दूसरे दिन विजय को घर के पिछवाड़े में खुदाई में दस हजार अशर्फियां मिलीं। रमेश को जब पता चला तो उसने सोचा कि योगी का वरदान है। उसी दिन उसे भी खेत में दस लाख अशर्फियां मिलीं। अब अक्सर ऐसा होने लगा कि रमेश को लाभ होता तो विजय को कम ही सही पर लाभ होने लगा। रमेश को अब फिर ईर्ष्या होने लगी। मैंने योगी से वरदान मांगने के लिए इतने प्रयत्न किए और विजय को बिना प्रयास के ही फल मिल रहे हैं। वह अब भी मुझसे आगे है। रमेश ने तंग आकर मन ही मन चाह लिया कि इससे तो अच्छा है, कुछ नहीं मिले। योगी की बात सही हुई, अब वरदान निष्फल हो चुका था। दोनों को लाभ मिलना बंद हो गया था। विजय फिर भी संतुष्ट था। आखिर रमेश ने विजय से पूछा, तुम खुश क्यों रहते हो, विजय बोला, मैं लाभ-हानि को तात्कालिक मान कर रहता हूँ। समय निकलते ही भुला देता हूँ। उसे विजय की बात समझ में आ गई थी। अब उसके मन में विजय के प्रति कोई ईर्ष्या नहीं थी।

जब देवताओं का घमंड चूर-चूर हुआ

उपनिषद का एक प्रसंग है। परमेश्वर ने देवों पर कृपा की और वे शक्तिशाली असुरों पर विजयी हो गए। विजय पाने के बाद हर देवता अहंकार से भर गया। उनमें से प्रत्येक इस विजय का श्रेय स्वयं को देता और दूसरों के योगदान को तुच्छ मानता। इससे देवताओं के मध्य अनावश्यक विवाद होने लगे और उनमें परस्पर कटुता पनपने लगी। यह देखकर परमेश्वर ने सोचा कि यदि यही सब होता रहा, तो असुर फिर देवताओं पर चढ़ाई कर देंगे और इनका आपसी वैमनस्य इन्हें पराजित करवा देगा। इस समस्या के हल के लिए ईश्वर ने एक विशालकाय यक्ष के रूप में स्वयं को प्रकट किया और देवताओं के सामने पहुंचे। देवताओं ने आश्चर्य से उन्हें देखा और उनका परिचय जानने के लिए सबसे पहले अग्नि देवता पहुंचे। यक्ष ने उनसे पूछा, आप कौन हैं? अग्नि देवता ने साभिमान उत्तर दिया - आप मुझे नहीं जानते? मैं परम तेजस्वी अग्नि हूँ। मैं चाहूँ तो सारी धरती को जलाकर राख कर दूं। यक्ष ने उन्हें एक सूखा तिनका देकर उसे जलाने को कहा, किंतु अग्नि देवता नहीं जला सके। फिर पवन देवता यक्ष का परिचय जानने पहुंचे। तब यक्ष ने उनसे परिचय पूछा, तो वे बोले - मैं पवन हूँ। मैं चाहूँ, तो पूरे ब्रह्मांड को उड़ा दूं। यक्ष ने वही सूखा तिनका इन्हें उड़ाने को कहा, किंतु पूरा जोर लगाने के बाद भी पवन देवता उसे न उड़ा सके। फिर इंद्र गए, किंतु तब तक यक्ष जा चुके थे। अब वहां पार्वतीजी प्रकट हुई और इंद्र को यक्ष रूपी परमेश्वर का परिचय दिया। अब देवताओं को परमेश्वर की शक्ति का ज्ञान हुआ और उनका अहंकार नष्ट हो गया। सार यह है कि अहंकार और अहंकारी का पतन सुनिश्चित होता है। अपनी शक्ति को सद्कार्यों में लगाने से वह सार्थक होती है।

ऋषि ने बताया प्रकृति का महत्व

एक बार राजा यदु ने ऋषि दत्तात्रेय से पूछा, महात्मन! संसार में अधिकांश लोग काम-क्रोध के वशीभूत होकर दु:खी रहते हैं। मैं जानना चाहता हूँ कि आपने आत्मा में ही परमानंद का अनुभव कैसे प्राप्त किया और कौन से गुरु ने आपको ब्रह्म विद्या का ज्ञान दिया?

दत्तात्रेय बोले, राजन! मैंने अपने अंत:करण से अनेक गुरुओं द्वारा मूक उपदेश प्राप्त किए हैं। यदु ने उन गुरुओं के विषय में जानना चाहा, तो दत्तात्रेय ने कहा, ये गुरु हैं - पृथ्वी, प्राणवायु, आकाश, जल, अग्नि, समुद्र, चंद्रमा, सूर्य, मधुमक्खी आदि। यह सुनकर यदु बोले - ये सब या तो जड़ हैं अथवा निर्बुद्धि। उनसे आपको क्या उपदेश मिला? तब दत्तात्रेय ने कहा - यदि हम अपने अंत:करण को निर्मल बना लें, तो इस विशाल प्रकृति से काफी कुछ सीख सकते हैं। मैंने पृथ्वी से धैर्य और क्षमा की शिक्षा ली। प्राणवायु यह सिखाती है कि जैसे अनेक स्थानों पर जाने पर भी वह कहीं आसक्त नहीं होती, वैसे ही हम भी आसक्ति, गुण-दोष से परे रहें। आकाश हर परिस्थिति में अखंड रहता है, वैसे ही हम भी अखंड रहें। जल स्वच्छता, पवित्रता और मधुरता का उपदेश देता है, तो अग्नि इंद्रियों से अपराजित रहते हुए तेजस्वी बनने की सीख देती है। समुद्र वर्षा ऋतु में न तो बढ़ता है और न ही ग्रीष्म में नदियों के सूखने पर सूखता है। इससे प्रेरणा मिलती है कि सांसारिक पदार्थों की प्राप्ति पर न खुश होएं और न उनके नष्ट होने पर दु:ख मनाएं। मधुमक्खी के परिश्रमपूर्वक संचित रस को कोई और ही भोगता है। अत: इससे हम यह जानें कि अनावश्यक संग्रह नहीं करना चाहिए।

इसी प्रकार सूर्य और चंद्र अपनी ऊष्णता व शीतलता से इस सृष्टि के संचालन में महती भूमिका निभाकर हमें भी समाज के लिए कुछ बेहतर करने की शिक्षा देते हैं।

इतिहास में अमर हो गए डॉ.जानुस कोरजाक

वर्ष 1979 को अंतर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के रूप में मनाया गया और इसी वर्ष बाल शिक्षा और बाल कल्याण के लिए अपना जीवन और प्राण समर्पित कर देने वाले पोलैण्ड के डॉ.जानुस कोरजाक की जन्म शताब्दी भी मनाई गई। डॉ.कोरजाक पोलैण्ड की राजधानी वारसा में एक अनाथालय के निदेशक थे। अनाथालय के दो सौ बच्चों को उन्होंने अपनी संतान से अधिक स्नेह दिया और अवसर आने पर उनके साथ ही मृत्यु को भी स्वीकार किया। हुआ यूं कि उस समय नाजियों का दमन-चक्र जोरों से चल रहा था। सभी यहूदियों को सामूहिक मृत्यु के लिए एक स्थान पर एकत्रित किया जा रहा था। डॉ.कोरजाक को भी अपना अनाथालय छोड़कर उन दो सौ बच्चों के साथ नाजी कैंप में आना पड़ा, जहां कई लाख यहूदी भेड़-बकरियों की तरह से भरे पड़े थे। बच्चों को मौत की सूचना देने की कठोरता डॉ.कोरजाक की जबान नहीं कर सकी। उन्होंने बच्चों से कहा कि वे पिकनिक पर जा रहे हैं। उनके प्रशंसकों ने उन्हें कहा कि बच्चों का मोह छोड़ दें, तो आपके प्राणों की रक्षा हो सकती है। डॉ.कोरजाक बोले - ये सभी बच्चे एक इकाई के रूप में मेरी आत्मा हैं। मैं जीवित अवस्था में अपनी आत्मा से अलग कैसे रह सकता हूँ। अपने जीवन का सुख और स्वार्थ तो मैं उसी दिन भूल गया था, जब इन बच्चों की खातिर अनाथालय में आया था। डॉ.कोरजाक और वे बच्चे आज नहीं रहे, किंतु इतिहास के पृष्ठों पर वे स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हो गए। वस्तुत: वे लोग जो मानव जाति का सही अर्थों में उपकार करना चाहते हैं, उन्हें सुख-दु:ख, यश, स्वार्थ, माया-मोह सब कुछ त्याग देना चाहिए।

जरा सोचो?

अपने मन मंदिर में कभी भी निराशा के अंधकार को प्रवेश न होने दो, क्योंकि तुम्हें तो सबके जीवन में आशाओं के दीप जलाने हैं।

भगवान तुम्हारा रक्षक है और सफलता तुम्हारा वरदान है तब तुम भला निराश कैसे हो सकते हो..?

अडाजन, सुरत। लायंस क्लब में 'तनाव मुक्त जीवन' पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.दक्षा बहन तथा मंचासीन हैं लायंस प्रमुख हितेश भाई देसाई, कनैयालाल गोकलानी तथा अन्य।

कोचीन। 'आई प्लेज फॉर पीस' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विधायक हबी इडेन, एम.आर.राजेन्द्र नीर, ब्र.कु.राधा बहन।

कोलकाता। चैतन्य देवियों की झांकी का उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में हैं बंगाली अभिनेत्री संताना बोस, कृष्णा सोनी, ब्र.कु.कानन बहन तथा अन्य।

रधुवीर पुरी, अलीगढ़। 'कॉल ऑफ टाईम' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उद्योगपति राकेश अग्रवाल, ब्र.कु.सुदेश बहन, ब्र.कु.सुनीता बहन तथा अन्य।

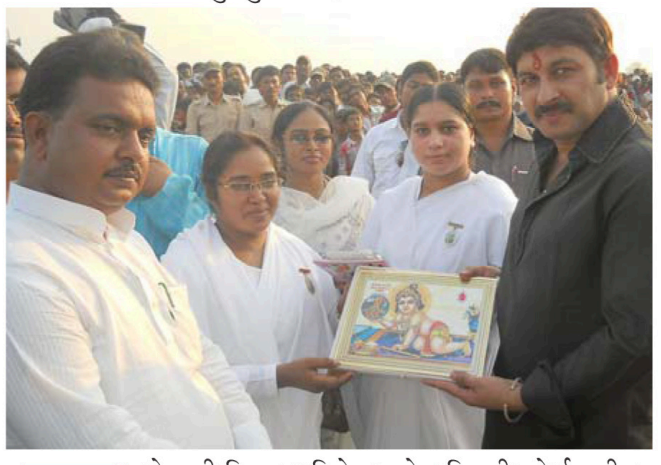

सासाराम। भोजपुरी फिल्म अभिनेता मनोज तिवारी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.बबीता बहन साथ में हैं ब्र.कु.सुनीता बहन।

झालरापाज। चैतन्य देवियों की झांकी का उद्घाटन करने के पश्चात् प्रभु स्मृति में हैं राजेश जी शर्मा, शारदा अग्रवाल, क्षेत्रीए संचालिका ब्र.कु.मीना बहन एवं ब्र.कु.वीणा बहन।